

# सङ्कीर्तन तरंगनी



*"The heavens are calling you and wheel around you*
*Displaying to you their eternal beauties:*
*And still your eye is looking on the ground*
*Whence He, Who all discerns, chastises you."*

*DANTE*



# SHRI RADHIKA LIBRARY
And
# SATSANG

is started to propagate the
message of
SHRI BHAGWAT GITA
&
SHRIMAD BHAGWATAM
and to bring about better
understanding between
the various religions
of the world.

---

PATRON

*H.E. Dr. K. N. Katju*

Governor of West Bengal.

PRESIDENT

*A .N. Sharma*

Major General.

Director of Medical Services.

(Indian Army) New Delhi.

# संकीर्त्तन-तरंगिणी



अभिमानं सुरापानं।
गौरवं नर्क रौरवम्॥
प्रतिष्ठा शूकरी विष्ठा।
त्रयं त्यक्त्वा सुखी भवेत्॥



गिरीन्द्रनारायण बी० ए०,

प्रथमवार १००० | राधाभवन, वृन्दावन। | मूल्य आठ आना

❀जय श्री राधा कृष्णाजी❀

# प्रस्तावना

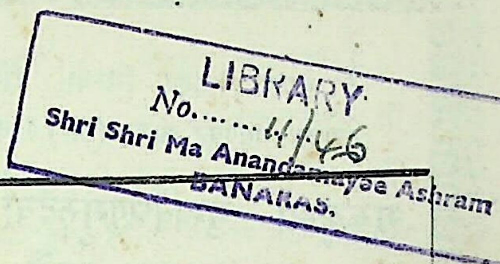
'सुरत करो श्री राधिके हम हैं भव जल माहिं।
आप ही बह जायेंगे जो नहिं पकड़ो बाहिं॥'

आज तीन वर्ष हुए जब 'श्रीराधाकृष्ण कृपा सार' में एक प्रार्थना-पद्धति भक्तों के नित्य पाठ निमित्त श्री राधा भवन सत्संग वृन्दावन से प्रकाशित हुई थी। थोड़े ही दिन में संस्करण समाप्त होगया। सन्तों का अधिक आग्रह देख कर श्री भक्त मेघराज जी के आयोजन से श्री राधा भवन सत्संग की संध्या समय की सङ्कीर्तन-पद्धति को इस पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

मैं पूज्य श्री कृष्णाजी को धन्यवाद देता हूं कि उन्हो ने अपनी कृत नाम–ध्वनि में से १६ नवीन ध्वनियाँ इस पुस्तक में प्रकाशन निमित्त दीं।

श्री राधा भवन, वृन्दावन।
श्रीराधाष्टमी
६—६—५१

दासानुदास
गिरीन्द्र नारायण




ऊधो ! ऐसो भगत मोहि भावै ।
सब तजि आस निरंतर मेरी सेवा में चित लावै ॥
कथनी कथै निरंतर मेरी जनम करम गुन गावै ।
सजल नयन अंखियन जलधारा करतल ताल बजावै ॥
जहं २ भगत चरन धारत हैं तहं २ तीरथ चलि आवै ।
तहाँ की रज को अङ्ग लगावत कोटि ब्रह्म सुख पावै ॥
मेरो रूप हृदय में तिनके मेरे उर वह आवै ।
बलि २ जाउं श्रीमुख की वानी "सूरदास" पद गावै ॥

हे कृष्ण करुणा सिन्धो दीन बन्धो जगत्पते ।
गोपेश गोपिका कान्त (श्री) राधाकान्त नमोऽस्तुते ॥

गुरूब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरूः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥२॥
न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः ।
तत्वज्ञानात परं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३॥
मन्नाथः श्रीजगन्नाथो मद्गुरुः श्रीजगद्गुरूः ।
मदात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥४॥

---

१—मेरे श्री गुरुदेव विश्व में व्याप्त हैं । उन परं पद स्वरूप को हमारा नमस्कार है ।

२—अज्ञान अन्धकार से व्याप्त नेत्र को ज्ञान के अंजन की सलाई लगाने वाले मेरे गुरु देव हैं । मेरा नमस्कार ॥

३—मेरे गुरु से परे तत्त्व नहीं है । उनसे बढ़ कर तप नहीं

४—वह परं ज्ञान स्वरूप हैं उन को नमस्कार ॥

जय राधे राधे राधिके श्रीराधे राधे राधिके

श्रीकृष्ण कान्त मनोहरा(जय०) सर्व गुण गण तत्परा (श्री०)

श्रीकृष्ण मन मधुकर हिता(जय०) मालती बन महकिता(श्री०)

श्रीकृष्ण आनंद दायिका(जय०) नित्य नरौतम नायिका(श्री०)

श्रीकृष्ण सुखदा सागरी(जय०) अमित रूप उजागरी(श्री०)

श्रीकृष्ण चित्ताकर्षिणी(जय०) सदा रस घन वर्षिणी(श्री०)

श्रीकृष्ण पंकज पोषिणी(जय०)समर हिय दुःख शोषिणी(श्री०)

श्रीकृष्ण हिय सरहंसिनी(जय०) सकल लोक प्रशंसनी(श्री०)

श्रीकृष्ण तरुवर वल्लरी(जय०) सदा अमृत रस भरी(श्री०)

श्रीकृष्ण मन मृग डोरिका(जय०) वसीकरन किशोरिका(श्री०)

श्रीकृष्ण प्राण कपूरहित(जय०) महा गुंजा मंजुलित(श्री०)

श्रीकृष्ण अली मनरंजनी(जय०) सहज सुभित कंजनी(श्री०)

श्रीकृष्ण चातक स्वाँतिका(जय०) जीव जीवन थाथिका(श्री०)

श्रीकृष्ण कनक सुहागिनी(जय०) दयकरा बड़ भागिनी(श्री०)

श्रीकृष्ण जलचर जलासय(जय०) अहर्निसि आधारमय(श्री०)

श्रीकृष्ण रस आस्वादिनी(जय०) प्रेयसी प्रीतम वसी(श्री०)

श्रीकृष्ण तन घन दामिनी(जय०) श्री हरि प्रिया स्वामिनी(श्री०)



पतितः स्खलितश्चार्तः क्षुत्त्वा वा विवशो ब्रुवन् ।
'हरये नमः' इत्युच्चैर्मुच्यते सर्वपातकात् ॥

मधुर मधुरमेतन्मङ्गलं मङ्गलानां
सकल निगम वल्ली सत्फलं चित्स्वरूपम् ।
सकृदपि परिगीतं श्रद्धया हेलया वा
भृगुवर नर मात्रं तारयेत् 'कृष्ण' नाम ॥

संकीर्त्यमानो भगवाननन्तः श्रुतानुभावो व्यसनं हि पुंसाम्
प्रविश्य चित्तं विधुनोत्यशेषं यथा तमोऽर्कोऽभ्रमिवातिवातः ।
मृषा गिरस्ता ह्यसतीरसत्कथा न कथ्यते यद् भगवानधोक्षजः
तदेव सत्यं तदुहैव मङ्गलं तदेव पुण्यं भगवद् गुणोदयम् ॥

---

कोई भी मनुष्य यदि गिरते ठोकर खाते दुख से पीड़ित होते तथा छींकते हुए भी विवश होकर उच्च स्वर से 'हरये नमः' ऐसा कहे तो वह सब पापों से मुक्त हो जाता है ।

मधुर से मधुर मंगल से भी मंगलकारी तमाम वेदों का सार फल स्वरुप, कृष्ण नाम. हे भृगुवर. यदि कोई श्रद्धायुक्त हो पुकारे तो वह संसार से तर जाता है ।

जिस प्रकार सूर्य अंधकार को और प्रचंड पवन मेघमाला को छिन्न भिन्न कर देता है उसी प्रकार भगवान अनन्त का संकीर्तन तथा श्रवण हृदय में प्रवेश कर पाप राशि का नाश कर देता है ।

तदेव रम्यं रुचिरं नवं नवं तदेव शश्वन्मनसो महोत्सवम्।
तदेव शोकार्णवशोषणं नृणां यदुत्तमश्लोक यशोनुगीयते ॥

संसार सिन्धुमतिदुस्तरमुत्तितीर्षो
नान्यः प्लवो भगवतः पुरुषोत्तमस्य।
लीला कथारसानिषेवणमन्तरेण
पुंसो भवेद्विविध दुःखदवार्दितस्य ॥

---

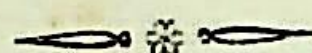
जिस वाणी से भगवान अधोक्षज का कथन नहीं किया जाता वह वाणी वृथा है, कथा भी सर्वदा मिथ्या है। जिससे भगवान के गुणों का उदय होता है वही वाणी सत्य है वही परं मंगलमय एवं पवित्र है।

---

जिससे भगवान उत्तम श्लोक का सुयश गान किया जाता है वही वचन सुंदर मनोहर नित्य नवीन, मन को निरन्तर आनन्दित करने वाला व मनुष्यों के दुःख समुद्र को सुखाने वाला होता है।

अति दुस्तर संसार सागर से पार होने के इच्छुक और नाना प्रकार के दुख रूप दावानल से संतप्त पुरुष के लिये भगवान पुरुषोत्तम की लीला कथा के निरंतर सेवा करने के अतिरिक्त अन्य उपाय नहीं है।

क्षण भङ्गुर जीवन की कलिका,
कल प्रात को जाने खिली न खिली।
मलयाचल की शुचि शीतल मन्द,
सुगन्ध समीर मिली न मिली।
कलिकाल कुठार लिये फिरता,
तन नम्र से चोट झिली न झिली।
कहले हरि नाम अरी रसना,
फिर अन्त समय में हिली न हिली।

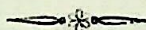


पल काटो सही इन नैनन के,
गिरधारी बिना पल अंत निहारें।
जीभ कटे न भजे नंद नंदन,
बुद्धि कटे हरि नाम विसारे।
'मीरा' कहे जरि जाओ हिय,
पद कंज विना पल अन्तर धारे।
सीस नवे ब्रज राज बिना,
वह सीसहिं काटि कुआँ किन डारे।



श्री कृष्ण गोपाल हरे मुकुन्द। गोविन्द हे नंद किशोर कृष्ण ॥
हा श्री यशोदा तनय प्रसीद। श्री वल्लभी जीवन राधिकेश ॥

जन्म जन्म जग कूप में गिर्‌यो मर्‌यो बहु बार।
करि करुणा करुणाअयन अबके लेहु उबार॥



हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा॥



भवे भवे यथा भक्तिःपादयोस्तव जायते।
तथा कुरुष्व देवेश नाथस्त्वं नो यतः प्रभो॥
नाम सङ्कीर्तनं यस्य सर्व पाप प्रणाशनम्,
प्रणामो दुःख शमनस्तं नमामि हरिं परम्।

---

कलिकाल में एक मात्र हरिनाम ही संसार पार करने का उपाय है अन्य गति नहीं है, नहीं है, नहीं है।

हे देवेश्वर, हे प्रभो आप हमारे स्वामी हैं, ऐसा कीजिए जिससे जन्म जन्म में आपके चरण कमलों में हमारी भक्ति बनी रहे।

जिनका नाम सङ्कीर्तन तथा प्रणाम सम्पूर्ण पाप व दुखों को शान्त करने वाला है उन परमात्मा श्रीहरि को नमस्कार है।

# श्री गोपी गीत

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावकास्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ॥ १
शरदुदाशये साधुजातसत्सरसिजोदर श्री मुषा दृशा।
सुरत नाथ तेऽशुल्कदासिका वरद निघ्न तो नेह किं वधः ॥ २
विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद वर्ष मारूताद वैद्युतानलात्।
वृषमयात्मजाद् विश्वतोभयाद्दृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः ॥ ३
न खलु गोपिकानन्दनो भवानखिलदेहिनामन्तरात्मदृक्।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये सख उदेयिवान् सात्वतां कुले ॥ ४
विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते चरणमोयुषां संसृतेर्भयात्।
कर सरोरुह कान्त कामदं शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम ॥ ५

---

कहन लगीं अहो कुंवर कान्ह प्रगटे जबते ब्रज तें।
अवधि भूत इन्दिरा अलंकृत ह्वै रही तब तें॥
अतिशय सुख सरसावत ससि ज्यों बढ़त बिहारी।
पुनि पुनि गोवधु प्रिय निपट तिहारी॥
नैन मूंदिबो महा अस्त्र लै हाँसी फाँसो।
कित मारत हो सुरत नाथ! विनु मोल की दासी॥
विष तैं जल तैं व्याल अनल दैं दामिनि झरतैं।
क्यों राखीं, नहिं मरन दई नागर नगधर तैं॥
जन जसुधा तैं प्रगट भये पिय! अति इतरान।
विस्व कुसल कारन विधना विनती करि आने।

व्रजजनार्तिहन् वीर योषितां निजजनस्मयध्वंसनस्मित ।
भज सखे भवत्किङ्करीः स्म नो जलरुहाननं चारू दर्शय ॥ ६

प्रणतदेहिनां पापकर्शनं तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम् ।
फणि फणार्पितं ते पदाम्बुज कृणु कुचेषुनः कृन्धि हृच्छयम् ॥७

मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण ।
विधिकरीरिमा वीर मुह्यतीरधरसीधुना ऽऽप्याययस्व नः ॥८

तव कथामृत तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम् ।
श्रवण मङ्गलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ॥ ९

प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम् ।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि ॥१०

चलसि यद् व्रजच्चारयन् पशून् नलिन सुन्दरं नाथ ते पदम् ।
शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त गच्छति॥११

अहो मित्र अहो प्राण नाथ इहि अचरज भारी ।
अपने जन को मारि करहु का को रखवारी ॥
जब पसु चारन चलत, चरन कमल धरि बन में ।
सिल तृण कण्टक अटकत कसकत हमरे मन में ॥

प्रनत मनोरथ चरन सरसीरुह पिय के ।
का घटि जैहैं नाथ ! हरत दुख हमरे जिय के ॥
कहाँ हमारी प्रीत कहाँ पिय ! तव निठुराई ।
मन पखान सौं खेंचे दई तैं कछु न बसाई ॥

दिनपरिक्षये नीलकुन्तलैर्वनरूहाननं विभ्रदावृतम् ।
घनरजस्वलं दर्शयन् मुहुर्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि ॥१२
प्रणतकामदं पद्मजार्चितं धरणि मण्डन ध्येयमापदि ।
चरणपङ्कज शन्तमं च ते रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन् ॥१३
सुरत वर्धनं शोकनाशनं स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम् ।
इतरराग विस्मारणं नृणां वितर वीर नस्ते ऽधरामृतम् ॥१४
अटति यद् भवानह्नि काननं त्रुटियुगायते त्वामपश्यताम् ।
कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते जड़उदीक्षतां पक्ष्मकृद् दृशाम् ॥२०
पति सुतान्वयभ्रातृ बान्धवानतिविलङ्घ्य तेऽन्त्यच्युतामताः ।
गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि ॥१६

---

जब तुम कानन जात, सहस युग सम बीतत छिनु !
दिन बीतत जिहि भाँति हमहिं जानत पिय तुमबिन ॥
पुनि कानन ते आवत सुन्दर आनन देखें ।
तहँ विधना अति क्रूर करी पिय नैन निमेखें ॥
बुध जन गन हरनी बानी बिनु जरति सबै तिय ।
अधर सुधा आसव तनक प्यावहु ज्यावहु पिय ॥
जद्यपि तिहारी कथा अमृत सम ताप सिरावे ।
अमर अमृत को तुच्छ करे ब्रह्मादिक गावे ॥
जिन यह प्रेम सुधाधर तुम्हरो मुख निरख्यो पिय ।
तिनकी जरन नहीं मिटी, रसिक सबिंद कोविद हिय ॥
संतत भय ते अभय करन कर कमल तिहारो ।
का घटि जैहैं नाथ ! तनक सिर छुवत हमारो ॥

रहसि संविदं हृच्छयोदयं प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम् ।
वृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः ॥१७

व्रज वनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम् ।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम्॥१८

यत्ते सुजान चरणाम्बुरुहं स्तनेषु भीताः
शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु ।
ते नाटवीमटसि तद् व्यथते न किंस्वित्
कूर्पादि-भिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ॥१९

×-×-×

---

अजहुँ नाहिन कुछ बिगरयो रच्छक पिय आवो ।
मुरली को जूठी अधरामृत आई पियावो ॥
फनि फनन पै अरपे डरपे नेकि नहिं तव ।
छतियन पै पग धरत डरत कित कुंवर कान्ह अव ॥

जानत हैं हम तुम जो डरत व्रज राज दुलारे ।
कोमल चरन सरोज उरोज कठोर हमारे ॥
शनै शनै पग धरिये हमें पिय निपट पियारे ।
कित अटवी महँ अटत गड़त तृन कुलिस अन्यारे ॥

छिन्न वैठत छिन्न उठत सुलोटत अति रजमाहीं ।
थोरे जल ज्यों दीन मीन आतुर अकुलाहीं ॥

( श्री नन्द दासजी कृत भावार्थ )

कस्तूरी तिलकं ललाट पटले वक्षः स्थले कौस्तुभं
नासाग्रे वर मौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम् ।
सर्वाङ्गे हरि चन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली
गोपिस्त्री परिवेष्टितो विजयते गोपाल चूड़ामणिः ॥ १ ॥

फुल्लेन्दीवर कान्तिमिन्दुवदनं वर्हावतंस प्रियं
श्रीवत्साङ्कमुदार कौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ।
गोपीनां नयनोत्पलार्चित तनुं गो गोप सङ्घावृतं
गोविन्दं कलवेणुवादन परं दिव्याङ्ग भूषं भजे ॥ २ ॥

अंसालम्बित वामकुण्डलधरं मन्दोन्नत भ्रू लतं
किञ्चित् कुञ्चित कोमलाधर पुटं साचि प्रसारैक्षणम् ।
आलोलाङ्गुलि पल्लवैर्मुरलिका मा पूरयन्तं मुदा
मूले कल्पतरो स्त्रिभंगललितं ध्याये जगन्मोहनम् ॥ ३ ॥

हे मृग मद तिलक धारी, कौस्तुभ मणि भूषित, हे बेसर धारण करने वाले तथा वेणु व कङ्कण को धारण करने वाले, हे सर्वाङ्ग में चन्दन लेपन करने वाले, हे मोतियों की माला धारण करने वाले, हे गोपियों द्वारा घिरे हुए, गोपाल चूड़ामणि तुम्हारी जय हो ॥ १ ॥

वर्हापीड़ाभिराम मृगमदतिलकं कुण्डलाक्रान्त गण्डं
कञ्जाक्षं कम्बुकण्ठं स्मित सुभग मुखं स्वाधरेन्यस्त वेणुम।
श्यामं शान्तं त्रिभङ्ग रविकर वसनं भूषितं वैजयन्त्यां
वन्दे वृन्दावनस्थं युवती शत वृतं ब्रह्म गोपाल वेषम ॥ ४ ॥

—()*()—

नव नीरद सुन्दर नील वपुं
सितिकण्ठ शिखण्डित भालशुभम् ॥
कमलाञ्चित खञ्जन नेत्र युग
तुलसीदल दाम सुगन्ध वपुम् ॥
जगदादि गुरूं ब्रजराज सुतं
प्रणमामि निरंतर श्री रमणम् ॥ ५ ॥

—।—

विकसित कमल सी कान्ति वाले हे चन्द्रानन हे मोर मुकुट धारी, श्री वत्स, कौस्तुभ, व पीताम्बर धारी, गोपी-नयन कमल द्वारा पूजित वदन वाले, गोप व गोपियों से घिरे हुए, मधुर वेणुवादन करनेवाले दिव्य भूषण भूषित गोविन्द तुम्हारी जय हो॥२॥

आजानुबाहु, बायें कर्ण में कुण्डल धारण करते वाले, चञ्चल भ्रकुटी वाले, मंद हास्य युक्त अधरों वाले आकर्ण नेत्र कमल वाले, वन्शीवादन से चञ्चल नृत्यकारी अगुलियों वाले, कल्पतरु के मूल के सहारे त्रिभंग हो स्थित जगत मोहन श्याम का मैं ध्यान करता हूँ ॥ ३ ॥

सजलं जलदनीलम् दर्शितोदारशीलम्
करतल धृत शैलं वेणुनादे रसालम् ।
व्रज जन कुल पालं कामिनि केलि लोल
कलित ललित मालं नौमि गोपाल बालम् ॥ ६ ॥

---

यंप्रव्रजन्तमनुपेतमुपेत कृत्यं
द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव ।
पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदुस्तं
सर्वभूतहृदयं मुनिमानस्तंऽस्मि ॥ ॥ ७ ॥

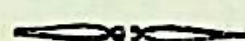
—×—

हे मोर मुकुट धारी, कस्तूरी तिलकधारी, हे कुण्डल से आवृत मुखारविन्द वाले, हे कमल नेत्र, हे शंख सी ग्रीवा वाले मन्द मुस्कान कारी, मुखारविन्द पर वेणुधारण करने वाले हे श्याम वर्ण, शान्त, त्रिभङ्गी, सूर्य के कान्ति सदृश पीताम्बर व वैज्यन्ती माला धारण करने वाले सहस्रों युवतियों से आवृत हे वृन्दावन विहारी ( ब्रह्म ) गोपाल वेष धारी, तुम्हारी जय हो ॥४॥

हे घन श्याम के समान सुन्दर नील वपु धारी, हे मयूर पिच्छधारी, हे कमल व खञ्जन पक्षि के से नेत्र वाले, हे तुलसी पत्रों की सुगन्धी माला धारण करने वाले जगद्गुरु व्रज राजनन्दन कमला पति, तुम्हारी सदा जय हो ॥ ५ ॥

सजल जलधर के सदृश वर्ण वाले, हे परम उदार, हे श्री गोवर्धनधारी, हे वेणु नाद कारी, हे व्रज पालक, हे व्रजाङ्गना क्रीड़ा-तत्पर, हे सौम्य मालाधारी गोपाल तुम्हारी जय हो ॥ ६ ॥

नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥८॥



नमो धर्माय महते नमः कृष्णाय वेधसे।
ब्राह्मणेभ्यो नमस्कृत्य धर्मान् वक्ष्ये सनातनान् ॥९॥

—o—

वाञ्छा कल्पतरुभ्यश्च कृपा सिन्धुभ्य एव च।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः ॥१०॥

---

सब प्रकार के लौकिक वैदिक कर्मों को त्याग कर अकेले ही वन की ओर जाते हुये (जिन शुकदेव जी को व्यास जी ने विरहातुर हो) हे पुत्र! हे पुत्र! पुकारा और तन्मयता के कारण जिन की तरफ़ से वृक्षों ने उत्तर दिया उन सब भूतों के अन्तरात्मक रूप मुनीश्वर को मैं प्रणाम करता करता हूँ ॥७॥

हे ब्रह्मण्य देव, हे गो-ब्राह्मण हितकारी, हे जगत सुखदाता, हे श्रीकृष्ण, हे गोविन्द, तुम्हारी जय हो, जय हो ॥८॥

हरि भक्ति रूप धर्म को नमस्कार है, जगत कर्ता भगवान कृष्ण को नमस्कार है, ब्राह्मण व सनातन धर्मको नमस्कार है॥९॥

तुलसीकाननं यत्र यत्र पद्मवनानि च ।
पुराण पठनं यत्र तत्र सन्निधो हरिः ॥

तत्रैव गंगा यमुना च वेणी
गोदावरी सिन्धु सरस्वतीं च ।
सर्वाणि तीर्थानि वसन्ति तत्र
यत्राच्युतोदार कथा प्रसङ्गः ॥११॥

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥१२॥

---

हे भक्त वाञ्छा-कल्पतरु, हे कृपा सिन्धो, हे पतित-पावन तुम्हारी जय हो तथा तुम्हारे वैष्णव जन की जय हो ॥१०॥

जहाँ तुलसी व कमलों के पवित्र वन हैं, जहाँ पुराणों का पाठ होता है वहाँ निरंतर हरि निवास करते हैं वहीं पर गंगा जमुना, वेणी तथा गोदावरी, सिंधु और सरस्वती एवं सर्व तीर्थ वास करते हैं जहाँ श्रीअच्युत की मनोहर कथा होती है॥११॥

नारायण को नमस्कार है तथा नर ऋषि को नमस्कार है। देवी सरस्वती तथा व्यासजी की जय हो ॥१२॥

गोवर्धन वासी साँवरे तुम बिन रह्यो न जाय हो ॥
बंक चितै मुस्काय के सुन्दर बदन दिखाय हो ।
लोचन तलफें मीन ज्यों जुग भर घरी बिहाय हो ॥
सप्तक सुर बंधान सों मोहन बेनु बजाय हो ।
सुरत सुहाय बाँधि के मधुर मधुर गाय हो ॥
रसिक रसीली बोलनी गिरि चढ़ि गाय बुलाय हो ।
गाए बुलाये धूमरी ऊँचे टेर सुनाये हो ॥
दृष्टि परी जा द्यौस ते तब ते रुचि न आन हो ।
रजनी नींद न आवहि बिसरो भोजन पान हो ॥
दर्शन को नैनाँ तपै बचन सुनन को कान हो ।
मिलबे को जियरा तपै हो जीए के जीवन प्रान हो ॥
मन अभिलाषा यह रहे लागे न नैन निमेष हो ।
एक टक देखों भाँवतो नागर नटवर वेष हो ॥
पूरन शशि मुख देख कै चित्त चौख्यो वाही ओर हो ।
रूप सुधा रस पान को जैसे कुमुद चकोर हो ॥
लोक लाज विधि वेद के छाँड्यो सबे विवेक हो ।
कमल कली रवि ज्यों बढ़े छिन छिन प्रीत विशेष हो ॥

मन्मथ कोटिक वारने देखि डग मग चाल हो।
युवती जन मन फंदना अम्बुज नयन विशाल हो ॥
कुञ्ज भवन क्रीडा करो सुख निधि मदन गोपाल हो।
हम वृन्दावन मालती तुम भोगी भंवर भुवाल हो ॥
यह रट लागी लाडले जैसे चात्रक मोर हो।
प्रेम नीर बरसाए हैं नव घन नन्द किशोर हो ॥
जुग जुग अविचल राखिये यह सुख शैल निवास हो।
गोर्वधन धर रूप पर बलिहारी 'चतुरभुजदास' हो ॥

---

रूप राशि सुख राशि (श्री) राधिका शील महागुण राशी।
कृष्ण चरण ते पावहिं श्यामा जे तव चरण उपासी ॥
जगनायक जगदीश पियारी जगति जननी जग रानी।
नित बिहार गोपाल लाल संग वृन्दावन रजधानी
अगतिन की गति भक्तन की पति श्री राधा पद मङ्गल दानी
अशरण शरणी भवभय हरणी वेद पुराण बखानी ॥
रसना एक नहीं शत कोटिक शोभा अमित अपारी।
कृष्ण भक्ति दीजे श्री राधे 'सूरदास' बलिहारी ॥

जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्री राधे

जय कृष्णा जय कृष्णा कृष्णा जय कृष्णा जय श्री कृष्णा ॥

श्यामा गोरी नित्य किशोरी प्रीतम जोरी श्री राधे ॥ जयराधे॥

रसिक रसीलो छैल छबीलो गुण गरवीलो श्रीकृष्णा॥जयकृष्णा॥

रासविहारिनि रस विस्तारिनि पिय उरधारिन श्रीराधे॥जयराधे॥

नव नव रङ्गी नवल त्रिभङ्गी श्याम सुअङ्गी श्रीकृष्णा॥जयकृष्णा॥

प्राण पियारी रूप उजारी अति सुकुमारी श्री राधे ॥जयराधे॥

मैन मनोहर महा मोदकर सुन्दर वर तर श्री कृष्णा॥जयकृष्णा॥

शोभा श्रेणी मोहा मैनी कोकिल वैनी श्री राधे ॥जयराधे॥

कीरतिवंता कामिनीकंता श्री भगवंता श्री कृष्णा ॥जयकृष्णा॥

चंदावदनी कुंदारदनी शोभा सदनी श्रीराधे ॥ जयराधे ॥

परम उदारा प्रभा अपारा अति सुकुमारा श्रीकृष्णा॥जयकृष्णा॥

हंसागमनी राजत रवनी क्रीड़ा कवनी श्री राधे॥जय राधे॥

रूप रसाला नयन विशाला परम कृपाला श्रीकृष्णा॥जयकृष्णा॥

कञ्चन बेली रति रस रेली अति अलबेली श्री राधे ॥जयराधे॥

सब सुख सागर सब गुणआगर रूप उजागर श्रीकृष्णा॥जयकृष्णा॥

रमणी रम्या तरुतर तम्या सगुण अगम्या श्री राधे॥जय राधे॥

१—मन्मथ-मन्मथा २—कुन्दकला सदृश दाँत पंक्ति है जिनकी

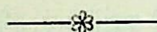
धाम निवासी प्रभाप्रकासी सहज सुहासी श्री कृष्णा ।।जयकृष्णा।

शक्तिाह्लादिनि अति प्रिय वादिनि उर उन्मादिनि श्रीराधे।।जयराधे॥

अङ्ग अङ्ग टोना सरस सलोना सुभग सुठोना श्रीकृष्णा।।जयकृष्णा।

राधा नामिनि गुण अभिरामिनि हरि प्रिय स्वामिनि श्री राधे।।जयराधे॥

हरे हरे हरि हरे हरे हरि हरे हरे हरि श्रीकृष्णा ।।जयकृष्णा॥



श्रित कमला कुच मण्डल धृत कुण्डल ए ।
कलित ललित बनमाल जय जय देव हरे ॥ १ ॥
दिन मणि मण्डल मण्डन भव खण्डन ए ।
मुनि जन मानस हंस जय जय देव हरे ॥ २ ॥
कालिय विषधर गञ्जन मन रञ्जन ए ।
यदुकुल नलिन दिनेश जय जय देव हरे ॥ ३ ॥
मधु मुर नरक विनाशन गरुड़ासन ए ।
सुर कुल केलि निदान जय जय देव हरे ॥ ४ ॥

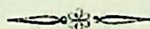
---

हे कमला–वक्ष–विहारी, हे कुण्डलधारी, हे मनोहर बनमाला धारी, हे देव, हे हरि, तुम्हारी जय हो ॥ १ ॥

हे देव ! रविमण्डल प्रकाश कारी, हे भव-भय-खण्डन हारी,हे मुनि मन सरोवर के हंस स्वरूप,तुम्हारी जय हो ।। २ ।।

हे देव, हे कालिए मर्दन, हे जन मन रञ्जनकारी, हे यदुवंश विभूषण, हे हरी, तुम्हारी जय हो ।। ३ ।।

अमल कमल दल लोचन भव मोचन ए ।
त्रिभूवन भवन निधान जय जय देव हरे ॥ ५ ॥
जनक सुता कृत भूषण जित दूषण ए ।
समर शमित दश कण्ठ जय जय देव हरे ॥ ६ ॥
अभिनव जलधर सुन्दर धृत मंदर ए ।
श्री मुख चन्द्र चकोर जय जय देव हरे ॥ ७ ॥
तव चरणे प्रणता वयमिति भावय ए ।
कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे ॥ ८ ॥
श्री जयदेव कवेरिदं कुरुते मुदम् ।
मङ्गल मुज्ज्वल गीतं जय जय देव हरे ॥ ९ ॥



हे मधु, मुर व नरकासुर विनाशक, हे गरुडासन हे देवता के संग क्रीड़ा करने वाले तुम्हारी जय हो ॥ ४ ॥

हे अमल कमल दल लोचन, भव-भय मोचन, त्रिभुवन सृष्टा तुम्हारी जय हो ॥ ५ ॥

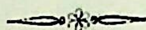
हे श्रीसीतापते, हे दूषण व रावण के विनाशकारी, हे हरि तुम्हारी जय हो ॥ ६ ॥

हे नूतन मेघ सदृश सुंदर कान्ति वाले, हे मंद्राचलधारी हे श्रीराधामुखचन्द्र के चकोर स्वरूप तुम्हारी जय हो ॥ ७ ॥

हे देव! हमें अपने चरण कमलों में प्रणत जान कर हमारा मङ्गल करो। हे हरि तुम्हारी जय हो ॥ ८ ॥

श्री जयदेव का यह उज्ज्वल रस मङ्गलकारी गीत सबको आनन्द प्रदान करे। हे देव हे हरि तुम्हारी जय हो ॥ ९ ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥

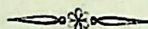


आव्हानं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
अर्चनं न जानामि क्षमस्व करुणा मये ॥



## नाम-ध्वनि

(दो०) 'रा' कहे ते प्रेम रवि उदय 'धा' कहे ते तम नाश ॥
जे जन राधा कहत हैं सदा रहें हरि पास ॥



(दो०) श्याम चलत मग मोहनी पग पग बरसत जाय ।
बिन देखे फंस जात मन देखे तो विक जाय ॥

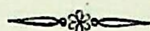


१—करुणासिंधो दीन बन्धो कृष्णा हे गोपाल हे ।
(श्री)राधावर गिरधरि कन्हैया भक्तजान प्रतिपाल हे ॥



२—कुँवर कन्हैया लाडले प्यारे नंदकुमार ।
राधावर गोविन्द हे गोपिका प्राणाधार ॥

३—हे प्राणनाथ मनमोहन सुन्दर प्यारे ।
श्री राधिका नायक जसुदा नन्द दुलारे ॥



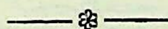
४—जय गिरिधारी जय घनश्याम ।
श्री राधा कृष्ण आओ राधे श्याम ॥

५—गोपीजन वल्लभ राधे श्याम ।
करुणा सिन्धो श्यामा श्याम ॥

६—जय राधे वृषभानु दुलारी ।
जय नन्द नन्दन जय गिरिधारी ॥

७—कृष्ण कन्हैया राज दुलारे ।
राधा रमण ब्रज चन्द्र मुरारे ॥

८—केशव गोविन्द गोपाल हरे ।
श्री राधा रमण नन्दलाल हरे ॥



९—हा करुणा मय कृष्ण मुरारी ।
(श्री) राधा कान्त गोवर्धन धारी ॥



१०—कृष्ण वल्लभे भानु दुलारी ।
राधिका वल्लभ जय गिरिधारी ॥

११—जय राधा प्रति जय नन्दलाला ।
केशव माधव दीन दयाला ॥

१२—अहो कृष्ण नन्द लाल श्याम यशुमति सुत प्यारे ।
ब्रजपति प्राणाधार नाथ प्रतिपाल हमारे ॥
सुन्दर वर घन श्याम गोपिका नयनन तारे ।
(श्री) राधा जी के प्राण सखे सर्वस्व हमारे ॥

१३—करुणा मयी राधे कृपा मयी राधे ।
कृष्ण प्रिय हे श्री राधे ॥

१४—गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे ।
राधा कृष्ण गोपी कृष्ण (श्री) कृष्ण प्यारे ॥

१५—राम कृष्ण हरि ।
राधे श्याम आओ जी ॥

१६—जय मीरा के गिरिधर नागर जय तुलसी के राम ।
जय नरसी के साँवरिया जय सूरदास के श्याम ॥



## —विनय—

दीनन दुख हरन देव सन्तन हितकारी ॥
अजामील गीध व्याध, इन में कहो कौन साध ।
पंछिहू को पद पढ़ात गणिका सी तारी ॥
ध्रुव के सिर छत्र देत प्रह्लाद को उबार लेत ।
भक्त हेतु बाँध्यो सेतु लंकपुरी जारी ॥
तंदुल देत रीझ जात, साग पात सों अघात ।
गिनत नहीं जूठे फल खाटे मीठे खारी ॥
गज को जब ग्राह ग्रस्यो दुःशासन चीर खस्यो ।
सभा बीच कृष्ण कृष्ण द्रौपदी पुकारी ॥
इतने में हरि आय गये वसनन आरूढ़ भये ।
'सूरदास' द्वारे ठाढ़ो आंधरो भिखारी ॥

---

प्यारे दर्शन दीज्यो आय तुम, बिन रह्यो न जाय ॥
जल बिन कमल चंद बिन रजनी ऐसे तुम देख्यां बिन सजनी ।
आकुल व्याकुल फिरूं रैन दिन विरह कलेजा खाय ॥
दिवस न भूख नींद नहिं रैना मुख से कथित न आवे बैना ।
कहा कहूँ कछु कहत न आवे मिल कर तपत बुझाय ॥
क्यों तरसाओ अंतरयामी आय मिलो कृपा कर स्वामी ।
मीरा, दासी जनम जन्म की पड़ी तुम्हारे पाय ॥

कौन सुने यह बात हमारी ।
समरथ और न देखौं तुम बिन. का सों विथा कहूँ बनवारी ॥
तुम अविगत अनाथ के स्वामी दीन दयाल निकुञ्ज विहारी ।
सदा सहाय करी दासन की जो उर धरी सोई प्रतिपारी ॥
अब केहि शरण जाऊँ यादवपति राखि लेऊ बल त्रास निवारी ।
'सूरदास' इन चरणन बलि बलि कौन गुसां ते कृपा बिसारी ॥

---

जो हम भले बुरे तो तेरे ।
तुम्हें हमारी लाज बड़ाई विनती सुनो प्रभु मेरे ॥
सब तज तुम शरणागति आयो निज कर चरण गहेरे ।
तुम प्रताप बल बदत न काहू निडर भये घर चेरे ॥
और देव सब रंक भिखारी त्यागे बहुत अनेरे ।
'सूरदास' प्रभु तुमरी कृपा ते पाये सुख जो घनेरे ॥

—::※::—

मेरी सुधि लीजौ हो ब्रजराज ॥
और नहीं जग में कोई मेरो तुमहिं सुधारन काज ॥
गनिका गीध अजामिल तारे सबरी औ गजराज ॥
'सूर' पतित पावन कर लीजै, बाँह गहे की लाज ॥

---

प्रभु ! मैं पीछौ लियो तुम्हारौ ।
तुम तौ दीनदयाल कहावत सकल आपदा टारौ ॥
महा कुबुद्धि कुटिल अपराधी अवगुन भरि लियो भारौ ।
'सूर' कूर की याही बीनती, लै चरनन में डारौ ॥

——※——

# अनन्यता

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई ॥
जा के सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई ।
तात मात भ्रात बंधु आपनो न कोई ॥
छाँडि दई कुल की कानि कहा करिहै कोई ।
संतन ढिग बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥
चुनरी के किये टूक ओढ़ लीन्ही लोई ।
मोती मूंगे उतार बन माला पोई ॥
अंसुअन जल सींच सींच प्रेम बेल बोई ।
अब तो बेल फैल गई आनंद फल होई ॥
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से बिलोई ।
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिय कोई ॥
आई थी भक्ति काज जगत देख मोही ।*
'दासि मीरा' लाल गिरधर तारों अब मोही ॥

# विरह वेदना

निशि दिन बरसत नयन हमारे ।
सदा रहत पावस ऋतु हम पर जब तें श्याम सिधारे ॥
नयन अञ्जन थिर न रहत कर कपोल भये कारे ।
कंचुकी पट सूखत नाहीं कबहुँ उर बिच वहत पनारे ॥
ऐसे सलिल सबै भई काया, पल न जात रिस टारे ।
'सूरदास' प्रभु गोकुल बूड़त काहे न लेत उबारे ॥

---

* "पाठांतर-भक्ति देख राजी भई जगत देख रोई"

केते दिन ह्व गये बिन देखे ।
तरुण किशोर रसिक नन्द नन्दन कछुक उठत मुख रेखे ॥
वह सौभाग्य वह कांति वदन की कोटिक चन्द्र विशेखे ।
वह चितवनि वह हास्य मनोहर वह नटवर वपु भेखे ॥
श्याम सुन्दर मिल संग खेलन की आवत जीय अपेखे ।
'कुभन दास' लाल गिरधर बिन जीवन जन्म अलेखे ॥

———

# अभिलाषा

अंखियाँ हरि दर्शन की प्यासी ।
देख्यो चाहत कमल नयन को निसि दिन रहत उदासी ॥
आये ऊधो फिर गये अंगना डार गये गर फांसी ।
केसर को तिलक मोतियन की माला वृन्दावन के वासी ॥
काहू के मन की कोऊ न जानत लोगन के मन हांसी ।
'सूरदास' प्रभु तुम्हरे दरश को जाय करवत लयों कासी ॥

———

# हरि लीला

हरि तेरी लीला की सुधि आवै ।
कमल नयन मनमोहनि मूरति मन मन चित्र बनावै ॥
एक बार जाहि मिलत मया करि सो कैसें बिसरावै ।
मुख मुसकान बंक अवलोकन चाल मनोहर भावै ॥
कबहुँक निबिड़ तिमिर आलिंगन कबहुँक पिक सुर गावै ॥
कबहुँक संभ्रम क्वासि क्वासि कहि संगहीन उठि धावै ।
कबहुँक नैन मूंद अन्तर्गति मणिमाला पहिरावै ॥
'परमानन्ददास' प्रभु श्याम ध्यान करि ऐसे बिरह गंवावै ॥

———

# दृढ़ भावना

माई री को मिलावे नंद किशोरे।

एक बार को नैन दिखावे मेरे मन के चोरे॥
जागत जाम गिनत नहीं खूटत क्यों पाऊँगी भोरें।
सुनिरी सखी अब कैसे जीजे सुनि चमचुर खग रोरे॥
जो यह प्रीत सत्य अंतर गति बिन काहू बनिहोरे।
परमानंद प्रभु आन मिलेंगे सखी शीश जिन फोरे॥

---

# वैराग्य

वा दिन की कछु सुधि कर मन माँ॥

जा दिन लै चल लै चल होई, ता दिन संग चलै ना कोई।
तात मात सुत नारा रोई, माटी चे संग दिये समोई।

सो माटी काटे तन माँ॥

उलझन नेहा कुलझत नारी, किस की बीबी किस की बाँदी।
किस का सोना किस की चाँदी, जा दिन जम लै चलिहैं बाँधी।

डेरा जाय परै वहि बन माँ॥

टांडा तुम ने लादा भारी, बनिज किया पूरा व्यौपारी।
जुआ खेला पूंजी हारी, अब चलने की भई तयारी।

हित चित मत तुम लाओ धन माँ॥

जो कोई हरि सों नेह लगाई, बहुत भाँति सोई सुख पाई।
माटी में काया मिलि जाई, कहै 'कबीर' आगै गोहराई।
साँच नाम साहब के सँग माँ॥

---

पीले प्याला हो मतवाला प्याला कृष्ण नाम रस का रे।
बालपना सब खेल गँवाया, तरुन भया नारी बस का रे॥
विरध भया बाई कफ ने घेरा, खाट पड़ा न जाय खिसका रे।
नाभ कँवल बिच है कस्तूरी, जैसे मिरग फिरै बनका रे॥
बिन गिरधर इतना दुख पाया बैद्य मिला नहीं इस तन का रे।
मातु पिता बन्धु सुत तिरया संग नहीं कोई जाय सका रे॥
जब लग जीवे हरि गुन गाले धन जोबन है दिन दस का रे।
चौरासी जो उबरा चाहै छोड़ कामिनी का चसका रे॥
कहै 'कबीर' सुनो भाई साधो नख सिख पूर रहा बिष का रे।

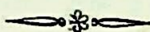
——❀——

मन फूला फूला फिरे जगत में कैसा नाता रे।
मात कहै यह पुत्र हमारा, बहन कहै बिर मेरा॥
भाई कहै यह भुजा हमारी, नारी कहै नर मेरा।
पेट पकरि कै माता रोवे, बाँह पकरि कै भाई॥
लपटि झपटि कै तिरिया रोवे, हंस अकेला जाई।
जब लग जीवे माता रोवै बहन रोवै दस मासा॥
तेरह दिन तक तिरिया रोवै, फेर करै घर बासा।
चार गजी चरगजी मंगाया, चढ़ा काठ की घोड़ी॥
चारों कोने आग लगाया, फूँक दियो जस होरी।
हाड़ जरे जस लाह कड़ी को, केस जरै जस घासा।
सोना ऐसी काया जरि गई, कोई न आयो पासा॥
घरि की तिरिया ढूढ़न लागी, ढूढ़ फिरी चहुँ देसा।
कहे 'कबीर' सुनो भाई साधौ छाँड़ो जग की आसा॥

——:o:——

## उपालम्भ

मन रे तू भूल्यो जनम गँवावे ।
खबर परे तोहि सिर ऊपर काल सदां मंडरावे ॥
खान पान अटक्यो निशि वासर जिह्वा लाड लडावे ।
गृह सुख देख फिरत फूल्यो सो सपनेहु चित्त भटकावे ॥
कै तू छाँड़ि जायगो इन को कै तोहि यहि छुड़ावे ।
ज्यों तोता सेंभर पर बैठे हाथ कछु नहिं आवे ॥
मेरी मेरी करत बावरे आयुश वृथा गंवावे ।
हरि सूँ हितु बिसार विषय सुख विष्ठा चित्त मन भावे ॥
गिरधर लाल सकल सुखदाता, सुनि पुरान श्रुति गावे ।
'सूरदास' वल्लभ उर अपने चरन कमल चित्त लावे ॥



## नाम महात्म्य

कलि कीर्तन परमान रे मन कलि कीर्तन परमान ।
हरि भक्ति संत की सेवा और धरम नहिं आन ॥
कहा भयो जो जप तप कीनो कहा भयो दीने दान ।
तीरथ व्रत बहुत कछु कीनो नहिं हरि नाम समान ॥
सुन्दर श्याम मनोरथ पूरन अधम उधारन जान ।
'सूरदास' प्रभु रसिक शिरोमणि संतन के धन पान ॥



# संत महिमा

आये मेरे नन्द नन्दन के प्यारे ।
माला तिलक मनोहर बानो त्रिभुवन के उजियारे ॥
हृदय कमल के मध्य विराजत श्री व्रजराज दुलारे ।
प्रेम सहित बसत उर मोहन, नेकहु टरत न टारे ॥
काहा जानु को पुन्य उदे भयो मेरे घर जु पधारे ।
'परमानन्द' करत नोछावर बारम्बारहुं वारे ॥

---

नारद साध सों अंतर नाहीं ।
जो कोई साध सों अंतर राखे, सो नर नरकै जाहीं ॥
जागे साध तो मैं हूँ जागूं, सोवै साध तो सोऊँ ।
जो कोई मेरे साध दुखावै, जड मूल से खोऊँ ॥
जहाँ साध मेरा जस गावैं तहाँ करूँ मैं वासा ।
साध चलैं आगै उठ धाऊँ मोहि साध की आसा ॥
माया मेरी अर्ध सरीरी, औ भक्तन की दासी ।
अड़सठ तीरथ साध के चरनन कोटि गया और कासी ॥
अंतरयामी नाम निज मेरा, जिन भजिया तिन पाई ।
कहे 'कबीर' साधु की महिमा, हरि अपने मुख गाई ॥

# रूप

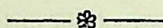
देखि सखि मो हिन मन चोरत ।
नैन कटाच्छ बिलोकन मधुरी सुभग भ्रकुटी बिचि मोरत॥
चंदन खोर ललट श्याम के निरखत अति सुखदाई ।
मनो अर्ध चंद्र तट अहिनि सुधा चुरावन आई ॥
मलयज भाल भ्रकुटी की रेखा करि उपमा एक ल्यावत ।
मानो एक संग गंगा यमुना नभ तिरछी धार बहावत ॥
भ्रकुटी चारु निरख ब्रज सुन्दरि यह मन करत विचार ।
'सूरदास' प्रभु शोभा सागर, कोऊ न पावत पार ॥

—※—

देखो माई सुन्दरता को सागर ।
बुद्धि विवेक बल पार न पावत मगन होत मन नागर ॥
तनु अति श्याम अगाध अंबुनिधि कटि पट पीत तरंग ।
चितवत चलन अधिक रुचि उपजत, भँवर परत सब अंग ॥
नैन मीन मकराकृत कुण्डल भुजबल सुभग भुजंग ।
मुकुतमाल मिलि मानो सुरसरि द्वै सरित लिय संग ॥
मोर मुकट मणिगण आभूषण कटि किंकिन नख चंद ।
मनो अडोल वारिध में बिंबित, उडग गण वृन्द ॥
बदन चंद्र मडल की शोभा अवलोकत सुखदेत ।
जनु जलनिधि मथि प्रकट कियो शशि श्रीअरु सुधा समेत ।
देखि सरूप सकल गोपीजन रहीं विचारि विचारि ॥
तदपि 'सूर' तरि सकी न शोभा रहीं प्रेम पचिहारि ॥

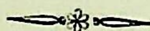
—::※::—

नंद भवन को भूषण माई ।
जसोदा को लाल वीर हलधर को राधा रमण सुखदाई ।
इन्द्र को इन्द्र ईश ईशन को ब्रह्म को ब्रह्म अधिक अधिकाई ॥
काल को काल देव देवन को वरुण को वरुण वरुद्ध वरदाई ।
शिव को धन संतन को सर्वस महिमा वेद पुराणन गाई ॥
'नन्द दास'को जीवन गिरिधर गोकुल मंडन कुंवर कन्हाई ॥

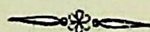


## उपदेश

हरि भक्तन सों गरव न करनो ।
यह अपराध परम पद हुते उतर नरक में परनो ।
हूँ कुलिन धनवान ए भिक्षुक इतनो मन में नांही धरनो ।
रांज सिंहासन अश्व पालकी तासो भवसागर नहीं तरनो ॥
खान पान बनाएभले जु वदन पसार फेरहु मरनो ।
खान पान बनाये भलेजु वदन पसार फेरहु मरनो ।
'सूरदास' यह सत्य कहत हों हरि भक्तन के संग उबरनो ॥



हरि न भजे तिन के मुख कारे ।
विषय रस को पीवत प्रेम सो नाम सुधा रस लागत खारे ।
श्री भागवत सुन्यो नहि श्रवनन कोटि जन्म पाप के मारे ॥
'सूरदास' ऐसे पतितन को सदा यमदूत बटोरत द्वारे ॥



बोलो भैया गोविन्द कृष्ण हरि।

माल दाम कछु नहीं बेठत छूटत नहिं गठरी॥
यह काया कागद की पुतरी छिन में जात जरी।
जा मुख 'सूर' प्रभु नांहि उचरत ता मुख धूर परी॥

—❀—

कौन रसिक है इन बातन को।

नन्द नन्दन बिनु कासों कहिये सुनि री सखी मेरे दुखिया मनको।
कहाँ वै यमुना पुलिन मनोहर कहँ वै चंद शरद रातिन को॥
कहाँ वे मंद सुगंध अनिल रस कहाँ वे षट पद जल जातिन को।
कहाँ वै सेज पौढ़िवो वन को फूल बिछोनो मृदु पातन को।
कहाँ वै दरस परस 'परमानंद' कमल नयन कोमल गातन को॥

—❀—

रे मन चिन्ता ना कर पेट की।

हलन चलन या में कछु नाहिन कलम लिखी जो ठेट की।
जीव जंतु जेते जल थल के तिन निधि कहा समेट की।
समय पाय सब ही कूं पहुँचे कहा बाप कहा बेट की॥
जा को जितनो लिख्यो विधाता ता को पहुंचे तेट की।
'सूरदास' ता हे क्यों न सुमरे जो है ऐसो चेटकी॥

—❀—

तज मन हरि विमुखन को संग।

जा के संग कुबुद्धि उपजत परत भजन में भंग॥
कागा कूं कहा कपूर चुगावन श्वान न्हवावत गंग।
खर कूं कहा अरगजा लेपन मर्कट भूषण अंग॥
कहा भयो पय पान करावत विष नहिं तजत भुजंग।
'सरदास' प्रभु कारी कामर चढ़त न दूजो रंग॥



# ॥ सूर पचीसी ॥

मन रे तू कर माधो सों प्रीत।
काम क्रोध मद लोभ माया छांड सकल विपरीत ॥ १ ॥
भौंरा भोगी बन भमेरे मोद न माने माप।
सब कुसुमन कूँ निरस करे रे कमल बँधावै आप ॥ २ ॥
सुन परमित प्रिय प्रेम की रे चातक चितवै बार।
घन आसा सब दुख सहे रे अनत न याचे द्वार ॥ ३ ॥
देखो करनी कमल की रे कीनो रविसों हेत।
प्राण तजे प्रेम न तजे रे सूख्यो सरहि समेत ॥ ४ ॥
दीपक पीर न जान ही रे पावक जरत पतङ्ग।
तन तो तिन ज्वाला जरयो रे चित न भयो रस भङ्ग ॥ ५ ॥
मीन वियोग न सहि सके रे नीर न जूझे बात।
देखि तू ताकी गति रे रति न घटे तन जात ॥ ६ ॥
परन परेवा प्रेम की रे चित ले चढ़त अकास।
तहाँ चढ़ि जु देखही रे भू पर तजत उसास ॥ ७ ॥
सुमिर सनेह कुरङ्ग को रे श्रवणन राच्यो राग।
धर न सक्यो पग पिछ मनो रे सर सनमुख उर लाग ॥ ८ ॥
देख जड़ता जड़ नारि की रे जरत प्रेत के संग।
चिता न चित्त फीक्यो भयो रे रांची पिय के संग ॥ ९ ॥

लोक वेद बरजे सबे रे नैन न देखे त्रास।
चोर न जिए चोरी तजे रे सब विधि सहत बिनास ॥१०॥

सब रस को रस प्रेम हैं रे विषयी खेले सार।
तन मन धन जोबन खस्यो रे तोउ न मानी हार ॥११॥

तैं तो रतन पायो भलो रे जान्यो न साधन साज।
प्रेम कथा अनुदित सुनी रे तोउ न उपजी लाज ॥१२॥

सदा संगाती आपनो रे जिय के जीवन प्रान।
सो तैं बिसारयो सहज ही रे हरि ईश्वर भगवान ॥१३॥

वेद पुराण स्मृति सबै रे सुर मुनि सेवैं जाय।
महा मोह अज्ञान में रे क्यों न संभारे ताहि। ॥१४॥

खग मृग मीन पतंग लोरें में सोधे सब ठोर।
जल थल जीव जिते कीतेरं कहूँ कहां लगि और ॥१५॥

प्रभु पूरण पावन सखा रे प्राणन ही के नाथ।
परम कृपाल दयानिधि रे जीवन जा के हाथ ॥१६॥

गर्भवास अति त्रास ते रे जहाँ न एको अङ्ग।
सुन शठ ते रे प्राणपति रे तहाँ न छाड्यो सङ्ग ॥१७॥

दिन रात पोषत रहे रे जैसे चोली पान।
वा दुख ते तोहि काढ़ि के रे गहि दीनो पय पान ॥१८॥

जिहि जड़ ते चेतन कियो रे रच्यो गुण तत्व निधान।
चरण चिकुर कर नख दिये रे नयन नासिका कान ॥१९॥

असन वसन बहु विधि दिये रे ओसर ओसर आन।
मात पिता भैया मिले रे नई रुचि नई पहचान ॥२०॥

सजन कुटुम्ब परिकर बढ्यो रे सुत दारा धन धाम।
महा मोह विषयी भयो रे चित आकर्षण काम ॥२१॥
खान पान परिधान में रे जोवन गयो सब बीत।
ज्यों बीट पर त्रिय संग बस्यो रे भोर भये भयभीत ॥२२॥
जैसें सुख ही धन बढ्यो रे तैसे हि तनहि अनंग।
धूम बढ्यो लोचन खस्यो रे सखा न सूझ्यो संग ॥२३॥
जग जान्यो सब जग सुन्यो रे बाढ्यो अयश अपार।
बीच न काहू जब कियो री यम दूतन दीनी मार ॥२४॥
को जाने कै बार मुवो रे ऐसों कुमति कुमीच।
हरि सों हेत बिसारि के रे सुख चाहत है नीच ॥२५॥
जो पै जिय लज्जा नहिं रे कहा कहूं सौ बार।
एको अंग न हरि भज्यो रे सुन शठ 'सूर' गँवार ॥२६॥*



---

*एक बार अकबर बादशाह ने जब श्री सूरदासजी से अपना यश गान करने को कहा तो आपने यह'सूर पचीसी'नामक प्रसिद्ध पद की रचना की, जिस को कुसंग याग सत्संग में अहर्निश पाठ करने से वैराग्य प्रत्यक्ष भगवत अनुग्रह प्राप्त होता है प्रभु के चरणारविन्दमें स्नेह बढ़ता है। [श्री ८४ वैष्णव वार्ता पृष्ठ २८०]हमारा धन्यवाद श्रीं कृष्णाजी को जिन्होंने अपने हस्त लिखित अष्ट सखा भक्तमाल ग्रन्थ से यह पद प्रकाशन निमित्त हमें प्रदान किया।

# परिशिष्ट

अपने उर्दू शिक्षित पंजाबी व सिंधी सत्संगियों की आग्रह देख उन के लिए संत-प्रिय दो पद-विनय व अनुभूति - के नित्य गान के लिये इस संग्रह में हम देते हैं—

## —विनय—

अजब है कुछ मेरी हालत का इज़हार।
सरासर हूँ अधम पापी गुनहगार॥
न लायक़ इलतमासो इलतजा के।
न क़ाबिल अपनी अरज़ें मुदआ के॥
नदामत नामए आमाल से है।
ख़िजालत आप अपने हाल से है॥
निकम्मा हूँ निकम्मी ज़िन्दगी है।
मेरी हस्ती को ख़ुद शरमिन्दगी है॥
न अक़बा का दुनिया का न दीं का।
अजब कुछ हूँ नहीं लेकिन कहीं का॥
असीरे बन्द दुनिया हूँ सरासर।
गिरिफ़्तारे क़फ़स बेबालो बेपर॥
वो नंगे इख़तिलाते आबो गिल हूँ।
कि रब्ते जिस्मो जाँ से मुनफ़इल हूँ॥
वो आवारा वतन जिसने न देखा।
वो बुलबुल हूँ चमन जिसने न देखा॥

अलग हूँ दूर हूँ सब से जुदा हूँ।
अजब बेकस हूँ बे बर्गो नवा हूँ॥
न कोई छोड़ जाने की निशानी।
न कोई यादगारे ज़िन्दगानी॥
हज़ारो हैं गुनाहों की गवाही।
सफ़ेदी पर है क्या क्या रूस्याही॥
न ज़िक्रे हक़ है न फ़िक्रे अमल है।
न कर्मो धर्म है विद्या न बल है॥
न जोगी हूँ न सन्यासी जती हूँ।
न रिन्दे बादाकश न मुत्तक़ी हूँ॥
न ज़ाहिद हूँ न मस्ते ख़राबात।
न आबिद हूँ न अहले करामात॥
न साधू हूँ न वैरागी न अवधूत।
न लाहूती न जबरूती न मलकूत॥
मेरी ग़फ़लत की हद कुछ भी नहीं है।
ख्याले नेको बद कुछ भी नहीं है॥
नहीं छूने के क़ाबिल जिस्मे नापाक।
मिलेगा किस तरह ख़ाक से ख़ाक॥
ग़रज़ जो कुछ हूँ तुझको ख़बर है।
मेरा अंजाम क्या मद्दे नज़र है॥
हमेशा है गुनहगारों पे रहमत।
हमेशा है तेरी बख़शिश की आदत॥
किया दुशमन का भी उद्धार तूने।
उतारा डूबतों को पार तूने॥

दयालू दीन बन्धू के सहारे।
थका बैठा हूँ मंज़िल के किनारे।
नहीं एक वक्त का तोशा बग़ल में।
झुका पड़ता है सिर फ़िक्रे अमल में॥
कुड़व रस्ता है और मंजिल कड़ी है।
जो गठरी सिर पै है बाझल बड़ी है॥
न पस्ती व बलन्दी का ठिकाना।
हज़ारों क़ाफ़ले गौ हैं रवाना॥
न रहबर कोई राहे पुरख़तर में।
अंधेरा होगा हर जानिब नज़र में॥
बुरा है वक्त जिसका कि डर है।
समा यह है जो पेशे नज़र है॥
दमे आखिर रवाँ आँखों में होगा।
किसी दिन यह समा आँखों में होगा॥
बदलती हों मोहब्बत की निगाहें।
हर एक जानिब हों हसरत की निगाहें॥
दमे रुख़सत हो घर वालों ने घेरा।
पड़ा हो लदा सब असबाब मेरा॥
हजूमे अहले मातम हों सिरहाने।
अज़ीज़ो अक़रबा ख़ेशो यगाने॥
हर एक की हों निगाहे हसरत आलूद।
खड़ी हो बेकसी बालीं पै मौजूद॥
अजब मायूस हो नाकामे दुनिया।
तपा हो हम असीरे दाम दुनिया॥

किसी को एक दो दम की इंतज़ारी।
किसी के दिल में हो फ़िक्रे सवारी॥
मेरे हर काम बाहम बट रहे हों।
उठाने वाले भाई छुट रहे हों॥
ग़रज़ सामाने रुख़सत जब हो तैयार।
पड़े जानो अजल में आ के तकरार॥
उसे ताजील हो हुक्मे क़ज़ा की।
इसे हो ढील अरज़े मुद्दआ की॥
वह विफ़री हो कि आगे घर से निकलूँ।
यह मचली हो कि दर्शन कर के निकलूँ॥
पड़ा झगड़ा हो कुछ आपस में भारी।
वो क्या ? बस एक तुम्हारी इंतज़ारी॥
नज़र आजाये छवि बाँकी अदा की।
मुंदें आँखें तो हो झाँकी अदा की॥
तसव्वुर रिश्तये जाँ में जकड़ लूँ।
छुटे तब नब्ज़ जब दामन पकड़ लूँ॥
जब आये आँख में दम प्राण प्यारे।
लगा हो ध्यान चरणों में तुम्हारे॥
वही हो ध्यान जिस को मैं दिखाऊँ।
वही झाँकी हो जिस को मैं बताऊँ॥

## ( झाँकी )

कदम की छाँ हो जमुना का तट हो।
अधर मुरली हो माथे पर मुकट हो॥
खड़े हों आप एक बाँकी अदा से।
मुकुट झोंकों में हो मौजे हवा से॥

ख़मीदा नाज़ से हो क़द वाला।
मुकुट घेरे हुए हो मह का हाला॥
सितारे झड़ रहे हो हों पीत पट से।
गुथी मोती की लड़ियाँ हों मुकुट से॥

कसी नाज़ुक कमर हो काछनी से।
बंधी बंसी हो जामें की तनी से॥
गले में हों जड़ाऊ हारो हैकल।
पड़े गुल गोश में हों क्रीट कुंडल॥

भरी गजरों से हो नाज़ुक कलाई।
बने हों बर्गे गुल दस्ते हिनाई॥
पड़ी सिंगार की हो फूल माला।
गले में दस्ते शौक़े ब्रज वाला॥

बराबर हों श्री राधा किशोरी।
मधुर सुर बाँस की बजती हो पोरी॥
कमर उलझी हुई नाज़ुक कमर से।
हो उलझा पीत पट नीलाम्बर से॥

मुकुट से चंद्रिका हाले से हाला।
कड़ों से हार बनमाला से माला॥
लड़ी बेसर से और मुक्ता से मकतूल।
लटों से क्रीट कुंडल से करन फूल॥

इधर उलझे हों बाज़ू से बाज़ू।
उधर उलझे हुए गेसू से गेसू॥
सफ़ाए रंग से आईना हो दंग।
झलकता गौर में हो श्याम का रंग॥

तबस्सुम हो दमे नज़्ज़ारा बाहम।
अयाँ एक छवि में हों हुस्ने दो आलम॥
जुदा हों गो बराय नाम दोनों।
बने हों एक राधा श्याम दोनों॥

वहम दीगर हो अक्से हुस्ने ज़ेबा।
कन्हैया राधा हों राधा कन्हैया॥
जो हो यों हुस्ने यकता का नज़ारा।
बहारे रूए ज़ेबा का नज़ारा॥

गिरे गरदन ढ़लक कर पीत पट पर।
खुली रह जायें खुद आँखें मुकुट पर॥
अगर इस छवि का आख़िर में समा हो।
मेरा मरना हयातें जावदाँ हो॥

दुशाले की एवज़ हो ब्रज की धूल।
पड़े उतरे हुए सिंगार के फूल॥
मिले जलने को लकड़ी ब्रज बन की।
बने अकसीर यों फुंक कर बदन की॥

ग़रज़ इस तरह हो अंजाम मेरा।
तुम्हारा नाम हो और काम मेरा॥
यह दौलत छोड़ दूँ नादाँ नहीं हूँ।
बहिश्त और मोक्ष का ख्वाहां नहीं हूँ॥

तुम्हीं को शर्म है जाँ के दिए की।
तुम्हीं को लाज है पैदा किये की॥
रहूँ ता इख़तलाते आबो गिल में।
रहे नक़शा इन्हीं चरनों का दिल में॥

ज़बाँ जब तक दहन में न हो बेकार।
पुकारा ही करूँ सरकार सरकार॥
हमेशा विर्द हो नामे गिरामी।
हमेशा हो ज़बाँ पर नामे नामी॥

इसी आनंद में बाक़ी निबाहूँ।
न मोहताजे अज़ीज़ो अक़रबा हूँ॥
किसी के सामने फैले न दामन।
न एहसाँ हो किसी का बारे गरदन॥

रहूँ बागो जहाँ में रंग बूसे।
कटें दिन ज़िन्दगी के आबरू से॥
भंग सरवे सही वाला तो अच्छा।
अगर हो मरज़िए वाला तो अच्छा॥

रवाँ बहरे करम हो सैल दर सैल।
रहे दुनिया की दौलत हाथ का मैल॥
भरोसा है मुकुट धारी तुम्हारा।
तुम्हारा ही है बनवारी तुम्हारा॥

गरज़ हो जब कभी झगड़ा मेरा तै।
कहें सब बोलो (श्री) राधा कृष्ण की जै॥

( श्री बनवारी लाल जी 'शोला' कृत )

# अपनी बीती

( श्री मियाँ 'नज़ीर' जी कृत )

—१—

प्यारे क्या कहूँ अहवाल की अपने परेशानी।
लगा ढलने मेरी आँखों से एक दिन खुद बरखुद पानी ॥
एकाएक आ पड़ी उस दम मेरे दिल पै यह हैरानी।
कि जिसकी हो रही है यह जो हर एक जा सनाखानी ॥
किसी सूरत से उस को देखिए कैसा है वह जानी ॥

—२—

चढ़ा इस फ़िक्र का दरिया भरा इस जोश में आकर।
कि एक लहर उसकी ने ले उड़ाया हो हवा पर ॥
क़रारो होश व अक़्लो सबरो दानिश बहगए एकसर।
अकेला रह गया आजिज़ ग़रीब बेकसो बे पर ॥
लगा रोने कि इस मुशकिल की हो अब कैसे आसानी ॥

—३—

यह सूरत थी कि जी में इश्क ने यह बात डाली।
मगा थोड़ा सा गेरू अरु वहीं कफ़नी रंगा डाली ॥
बिना मुद्रे गले के बीच सेली बरमला डाली।
लगा मुँह पर भभूत अरुशक्ल जोगी की बना डाली ॥
हुआ अवधूत जोगी जोगीयों में आप गुरु ज्ञानी ॥

—४—

उठाई चाह की झोली पियाला चश्म का खप्पर।
बना कर इश्क़ का कण्ठा तलब का सिर पै रख चक्कर ॥
मुडासा गेरवा बाँधा रखा तिरशूल काँधे पर।
लगा जोगी हो फिरने ढूँढना उस यार को घर घर ॥
दुकान बाज़ार औ कूचा ढूँढने की दिल ने फिर ठानी ॥

–५–

लगी थी दिल में एक आतिश धुआँ उठता था आहों का।
तमाशे के लिए हलका बंधा था साथ लोगों का॥
तलब थी यार की और गर्म था बाज़ार बातों का।
न कुछ सिरकी खबर थी और न था कुछ होश पाओंका॥
न कुछ भोजन का अंदेशा न कुछ फ़िक्रो अमल पानी॥

–६–

फिर इस जोग का ठहरा अजब कुछ आन कर नक़शा।
जौ आया सामने मेरे तो कहना उससे सुनता जा॥
कहो प्यारे हमारे यार को तुमने कहीं देखा।
जो कुछ मतलब की वह बोला तो उससे और कुछ पूछा॥
अगर यों ही लगा कहने तो फिर देना अनाकानी॥

–७–

कभी माला से कहता था लगाकर जल से ए माला।
हुआ हूँ जब से मैं जोगी तू ही उस यार को बतला॥
कभी घबराके हंसता था कभी ले स्वाँस रोता था।
लबों से आह आँखों से बहा पड़ता था दरया सा॥
अजब जंजाल में चक्कर के डाले है परेशानी॥

–८–

कोई कहता था बाबाजी! इधर आओ इधर बैठो।
पड़े फिरते हो ऐसे रात दिन टुक बैठो सस्ताओ॥
जो कुछ दरकार हो मेवा मिठाई हुक्म फ़रमाओ।
न कहना उस से ले आओ न कहना उससे मत लाओ॥
खबर हर गिज़ न थी कुछ उस घड़ी अपनी न बेगानी॥

-९-

बड़ी दुबधा में थी उस दम कहाँ जाऊँ कहाँ देखूँ।
किसे देखूँ किसे पूछूँ किधर जाऊँ कहाँ ढूँढूँ ॥
करूँ तदबीर क्या जिससे मैं उस दिलबर को पाऊँ।
निशाँ हरगिज़ न मिलता था पड़ा फिरता था जूँ मजनूँ ॥
अजब दरयाए हैरत की हुई थी आके तुग़यानी ॥

-१०-

उसी को ढूँढता हुआ मसजिद में जा पहुँचा।
जो देखा वाँ भी है रोज़ो नमाज़ों का ही एक चरचा ॥
कोई जुब्बे में अटका है कोई दाढ़ी में उलझा।
तसल्ली जब न पाई कुछ तो आख़िर वाँ से घबराया ॥
चला रोता हुआ बाहर बा अहवाले परेशानी ॥

-११-

यही दिल से कहा टुक मदरसे को झाँकिए चल कर।
भला शायद उसी में हो नज़र आ जाए वह दिलबर ॥
गया जब वाँ तो देखा वाँ कुछ और भी बदतर।
किताबे खुल रही हैं मच रहा है शोरा ग़ुल एकसर ॥
हर एक मसले पै फ़ाज़िल कर रहे बहसे नफ़सानी ॥

-१२-

चला जब वाँ से घबराकर तो फिर यह आगई जी में।
कि यह जगह तो देखी अब चलो टुक दैर भी देखें ॥
गया जब वाँ तो देखी मूर्ति और घंटों की झंकारें।
पुकारा तब तो रो कर आह किस पत्थर से सिर मारें ॥
कहीं मिलता नहीं वह शोख़ काफ़िर दुशमने जानी ॥

–१३–

कहा दिल ने कि अब टुक तीर्थों की सैर भी कीजे।
भला यह दिलरुबा शायद उसी जगह पै मिल जावै॥
बहुत तीरथ मनाए और किये दर्शन भी बहुतेरे।
तसल्ली कुछ न पाई तब तो हो लाचार वाँ से॥
मोहब्बत छोड़ कर बसती की ली राहे बयाबनी॥

–१४–

गया जब दश्त व सहरा में तो रोया आह क्या करिए।
कहाँ तक हिज्र में उस शोख़ के रो रो के दिन भरिए॥
किधर जाईए और किस के ऊपर आश्रय धरिए।
यही बेहतर है अब तो डूबये या जहर खा के मरिए॥
भला जी जान के जाने में शायद आ मिले जानी॥

–१५–

रहा कितने दिनों रोता फिरा हरदश्त में नालाँ।
ग़रीबो बेकसो तनहा मुसाफ़िर बेवतन हैराँ॥
पहाड़ों से भी सिर पटका फिरा शहरों में हो गिरयाँ।
फ़िरा भूखा पियासा ढूँढता दिलबर को सिरगरदाँ॥
न खाने को मिला दाना न पीने को मिला पानी॥

–१६–

पड़ा था रेत में और धूप में सूरज से जलता था।
लगी थीं दिल की आँखें बारे और जी निकलता था॥
उसी के देखने के ध्यान में हर दम निकलता था।
बले महबूब से कुछ हाय मेरा बस न चलता था॥
पड़े बहुत आँसू लालागूँ लाले बदख़शानी॥

-१७-

जब इस अह्वाल को पहूँचा तो वह महबूब बेपरवाह।
वहाँ सौ बेक़रारी से मेरी बालीं पै आ पहूँचा॥
उठाकर सिर मेरा ज़ानूँ पै अपने रख के फ़रमाया था।
कहा ले देख ले जो देखना है अब मुझे इस जा॥
अयाँ है इस घड़ी करते तेरे पै भेद पिन्हानी॥

-१८-

यह सुन रख पहले हम आशिक़ को अपने आज़माते हैं।
जलाते हैं सताते हैं रुलाते हैं बुलाते हैं॥
हर एक अह्वाल में जब ख़ूब साबित उसको पाते हैं।
उससे मिलते हैं उसको मुँह लगाते हैं॥
उसे पूरा समझते हैं हम अपने ध्यान का ध्यानी॥

१९

सदा महबूब की आई ज्यों ही कानों में वाँ मेरे।
बदन में आगया जी और वहीं दुख दर्द सब हेरे॥
फिर आँखें खोल कर दिलबरके मुँह पर टुक नज़र करके।
ज़मीं व आसमाँ चौदह तबक़ के खुल गए परदे॥
मिटी एक आनमें सब कुछ ख़राबी और परेशानी॥

२०

हुई जब आ के एकताई दुई का उठ गया परदा।
जो कुछ वह्मो गुमाँ थे उड़ गए एक दम में हो पारा॥
'नज़ीर' उस दिन से हमने फिर जो देखा ख़ूब हर एक जा।
वही देखा वही समझा वही जाना वही पाया॥
बराबर होगए हिन्दु मुसलमाँ गबरो निसरानी॥

# उपसंहार

तुध विन होर जो मंगना सिर दु:खों दे दुख।
दे नाम संतोख्या उतरे मन दी भुख ॥
—श्री ग्रन्थ साहब—

*Whatever thou lovest*
*That thou become must.*
*God if thou lovest God*
*Dust if thou lovest dust.*
(SCHEFFER)

'रसो वै सः'—करुण-रस की साक्षात् विग्रह, ऐसे हैं मेरे श्याम! उनकी रसिकता की अनुपम माधुरी की गाथा देखना चाहो प्रेम के अमर मन्दिर में देखलो वे चित्र—श्री रंगनाथजी वन मस्तक बढ़ा वारामुखी के हाथों अपने मुकट धारण कराना, मिश्र देश में थाएस सी वेश्या को कण्ठ लगाना, मैगडलीन सी पतिता को संसार की कठोर ताड़ना से बचा अपनाना, तोते पढ़ाती गणिका को विमान भेज अपने धाम बुलाना--सब देश में सब जाति के छोटे बड़ों को अपना के अपने उस अनूपम स्वभाव का परिचय असंख्य बार दिया:—

बशर जब खम किये गरदन सरे दरबार आता है।
गुनाहों को मैं भूल जाता हूँ बड़ा ही प्यार आता है॥

सच है अपनी कृपा शक्ति पर अपनी सत्यप्रज्ञता आप्त कामता इत्यादि का भीष्म व गोपीजन के बीच क्या उपहार न दे चुके। और उस दिन की बात जब ऋषि उन का स्तव गान कर रहे थे अपने पापोंके भार से जिनकी निगाह न उठती थी और नेत्रों से पश्चाताप के अश्रुकी अविरल धारा बहती थीजब पापी उनके दरबार में आये—वे ऋषियों के स्तव को भूल गये और गुनहगारों की तरफ़ बह चले उस वक्त का वह दृश्य किसी ने ठीक ही दरसाया है:—

जब तेरी रहमत ने दिया हम गुनहगारों का साथ।
चीख़ उठे बेगुनाह हम भी गुनहगारों में हैं॥

तुमने सदा के लिये पश्चाताप से विदग्ध पापियों के हृदय में निवास कर जगत को सदा के लिये उपदेश कर दिया —

मरा मजो नयाबी ववागो आलमे क़दस।
दरूँ सीनए सोज़ाँ आस्याँ तलब॥

प्यारे ! क्यों तुम को पतितों का हृदय मन्दिर ऐसा सुहाता कि उस को पावन करने को आतुर रहते हो मिस्टर एकहार्ट ने तभी तो अपने अवगुण पर दृष्टि न दे तुम्हारी करुणा पर नज़र रख कर्मकांडी की ताड़ना से भीत न हो कह दिया—

"Cast me into hell ? His goodness forbids. But if he did cast me into hell, I should have two arms to embrace Him. One arm is true humility that I should lay beneath Him and be thereby united to His holy humanity. And with the right arm of love, which is united with His holy divinity, I should so embrace him that He would have to go to hell with me. And I would rather be in hell and have God, than in heaven and not have God.

अर्थात्–भगवान मुझे इतना प्यार करते कि नर्क में भी मेरा पीछा करते—बुरी या भली कैसी भी अपनी वस्तु हो वात्सल्यता वश

कौन त्यागने में समर्थ है और श्यामसुन्दर तो 'भगवान् हैं। ऐसे ऐश्वर्यशाली प्रेम वश सुतल लोक में दरवान बन बलि राजा को अपना रहे हैं।

बस भगवान चाहते हैं तो केवल इतना. कोई कहदे कि 'मैं तेरा हूँ तेरी अनन्य शरण हूँ तेरी परीक्षा के योग्य नहीं तेरी करुणा की गाथा का विस्तार सुन तेरे चरणों में आ पड़ा हूँ अब तो कण्ठ लगाले।' भक्त की अटूट निष्ठा है कि वह—

सकृदेव प्रपन्नाय त्वास्मीति च याचते।
अभयं सर्व भूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतं मम् ॥(श्रीवाल्मीकी रामायण)

तथा-अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसिता हि सः ॥ (गीता ६-३०)

के उपदेशक फिर तो पीताम्बर से अश्रुपूर्ण पतित के नेत्र को पोंछने को आतुर हो जाते। क्या भूल गये उनकी वह महात्मा जटायू जी प्रति करुणा उनको गोद में ले जटाओं से धूल झाड़ना तथा अपने हाथों गीध राज का श्राद्ध करना तथा लपट झपट कर कंगाल सुदामा के कंटक पूर्ण चरण छाती पर रख नेत्र कमल से वहाँ काँटों को खोजना तथा अश्रू बिन्दु से अर्घ देना।

पतितों को सान्त्वना दे हौसला बढ़ा उन को अनेक लीला कर अपनी ओर आकर्षण करना– हमारी समझ में भगवत अवतार का मुख्य हेतु यही आया "I became man for thee. If you do not become god for Me you do Me wrong, (ECKHART) वह हौसला कैसा बढ़ा वह निष्ठा कैसी दृढ़ वह प्यारे से मिलने की लालसा तथा वह आश्वासन कैसा संतों ने अनेक प्रकार से गान किया है:—।

क्यों डरूँ कसरते असयाँ से दावर हो जो तुम ।
मगफ़रत के सामने जुरमो खता कहने को है ॥१॥

मुट्ठी भर और मिल गया अंबार में तो क्या ।
लिखदो गुनाहे खल्क़ भी मेरे हिसाब में ॥
मैं कसरतें गुनाह से खुश हूँ कि रोज़े हश्र ।
कुछ तो कटेगा वक्त सवालो जवाब में ॥
फ़ुरसत मिले ज़माने को एक तुम हो एक मैं ।
दस बीस हश्र जायें गुज़र इस हिसाब में ॥
तंग आके तुम कहो किये क्यों इस क़दर गुनाह ।
और मैं उमेदे उफ़् कह दूँ जवाब में ॥२॥

फिर देखो उस का हौसलए करीमी ।
गुनहगार कहदे गुनहगार हूँ मैं ॥३॥

क्यों मेरी कशतए उम्मीद हो गर्क़े आबे बला ।
नाखुदा जब तुम हो पार लगाने वाले ॥४॥

पर यह अनूपम निष्ठा केवल सत्संग में ही सुलभ है। इस लिये अपने को अधम गुनहगार मान अपने कर्मों से लज्जित सदा रह अपने समान पतितों के सत्संग में जा उन के साथ मिल रो रो करुण क्रन्दन कर कर 'राधेश्याम को पुकारो और विश्वास रखो वे आयेंगे और तुम को कण्ठ लगाएँगे। वे बड़े रसिया है। अहंकार व पाप यही उन वात्सल्यमयी राधा पति--मां का आहार है। तुम उनको बड़े प्रिय हो।

कृपा के आधीन है हमारा जीवन लक्ष--प्रभु मिलन की प्राप्ति-पुकारते चलना हमारा काम है, अश्रु माला गूंथते चलना, आहें खींचते चलना, निराशा आशा की लहरों में गोता लगाते उभरते

चलना, विरह को ही अपना पथ-प्रदर्शक जान उस की शरण लेते चलना और अपनी समाधि पर केवल इतना ही उपहार चाहना, इतनी ही यादगार—

बस है यही मज़ार पै मेरे कि गाह गाह।
जाए चिराग़ कोई दिले मेहरबाँ जले॥

जीते जी न मिला तो प्राण न्योछावर पर तो अब क्यों मिलेगा क्यों कि रोना रुलाना दोनों उसे प्यारे है। और जहाँ मेरी जीवन गाथा इन शब्दों में लिखी होगी—

अब कौन हाले दिल कहे उस मस्ते नाज़ से।
एक आह थी वह भी सिर पटक गई॥

वह भी अपनी वीती गा जायेगी जिसे कोई सुनेगा और दोहराता चलेगा। वह क्या—

पड़ी है खाक पर यह लाश उस रश्के शहीदाँ की।
लहू के आँसु रोता है जिस को क़त्ल कर खूनी॥

अंत में केवल यही कहना है जब तक उस के वियोग में यह स्वाँस काँटे से न खटकेंगे, पल कल्प से न वीतेंगे उस का मिलन दूर है। हमारी जीवन यात्रा उस के मिलन निमित्त है विषय भोग के लिये नहीं। उस के मिलन की युक्ति कलिकाल में निमानी हो रो रो कर पुकारना है। यही संकीर्तन नाम से प्रसिद्ध औषधि कलिकाल् में शास्त्र व संतों ने भव रोग की गान की है। भक्तों के नित्य पाठ निमित्त हमने भगवान के गुण, नाम संकीर्तन निमित्त पद व ध्वनीयाँ व स्तव इस पुस्तक में दी है। दुःसाहस कर इतना कहा चाहता हूँ कि इस पुस्तक को केवल पतित ही अपनायें वे ही हम पतितों के द्वारा उपस्थित की

इस सामग्री के अधिकारी हैं जो भगवान की करुणा का आश्रय ताकते बल हीन हो उनकी चौखट पर यह हट बाँधे पड़े हैं:—

फ़क़ीरों का कासा न जब तक भरेगा।
(श्याम!) तेरे दर पै हर वक़्त फेरी रहेगी॥

क्यों कि उन को विश्वास है जब उन करुणेश्वरी के दर पर कुत्ते बन हम पड़े रहेंगे तो अवश्य वह किशोरी जी जब शाम को वन विहार को निकलेंगी हमारी ओर आर्द्र दृष्टि कर सखि से संकेत कर देंगी फेंक दो एक प्रेम का कण इस को भी कब से यह दीन आशा लगाए यह दर छेंके पड़ा है। वह सम्पत्ति पा मैं जन्मों का भिखारी निहाल हो जाऊंगा।

बड़ी लालसा मुझे संतों की चरण रज की है क्यों की मुझे सत्संग में केवल यही सार लगा कि भगवत उपलब्धि केवल उस से अभिषेक करने पर ही है। सो ही मेरी दृढ़ आन है—

अगर मिल जाये तलछट भी हरि भक्तों के सागर से।
न लूँ फिर दें जो भर भर किशतियाँ सहबाए कौसर से॥

और यही मेरी प्रार्थना है—

उठ फ़रीदा गौन कर दुनिया वेखन जाय।
मत कोई बखशा मिलवञ्जे तू भी बखशा जाय॥

किताब है! समर्पण भी किसी को हो। किसी ने किसी को कुछ शब्दों से समर्पण किया था। मुझे वह युक्ति सुहाई सो मैं भी उसी का आश्रय लेता हुआ कहता—

To those who have watched terrestrial transformations and eruptions, have asked for answer why and have received none:

To those who tired and home weary in a long and slow journey have yearned and sought for justice and found her not:

To those whe have suffered as humans suffer waiting in FAITH for liberation:

To those who in faith and patience have mysticwise found a golden thread so delicate, so strong-delicate as human frailty yet strong to draw the tossed and home weary from out the ocean's tempest to the harbour of Light, from out the dark ocean's tempest to the light DIVINE in its cheer:

To men and women regenerate to the Illumined ones. ( SEMA-KAND )

अर्थात्, जिन्हों ने अपने परमार्थिक जीवन में भूकम्प व बवंडर उत्थित होते देखे हैं और दिल दबाने पर भी फूट चला है. चीख निकल पड़ी है—'हाय ! ऐसा क्यों' ? किन्तु स्नेह शून्य हृदय से प्रतिध्वनित हो वैसे ही शब्द लौट आये हैं—

जो मंजिल के निकट पहुँच थक कर बैठ गये हैं और करुण क्रन्दन कर कृपा की भिक्षा माँग रहे हैं—

जो विधाता की ठोकरें या न्याय की चौखट पर शिर मार २ हार कर दुखों के पहाड़ों को पार करने को प्यारी राधाजी की करुणा की घाटी की खोज कर रहे हैं—

जिनके हृदय में आशा की विद्युत सहसा झलक निराशा की तिमिर हटा उनकी जीर्ण तरणी को भवसागर पार कर उस ओर पहुँच जाने की दृढ़ भावना सहसा जगा उठी है—

जो भाग्य के थपेड़ों से न डर श्रद्धा व निष्ठा की पतवारों से खे कर पार होने में दृढ़ विश्वास रखते हैं— ऐसे चेते जिज्ञासू के लिए यह पुस्तक रूप उपहार है

विरही हृदय की सुधा स्वरूप यह पुष्पाञ्जली आप की भेंट है। मेरी यह लालसा है कि आप से प्रेमी अपने प्रिय श्यामाश्याम से मेरी यह प्रार्थना स्वीकार करादें:

Oh to be nothing, nothing !
Only to lie at His feet;
A broken and empty vessel
For the Master's use made meet,
Empty, that He may fill me
As forth to His service I go
Broken that so more freely
His life through me may flow.

( A Christian Hymn. )

अर्थात्—वह वंशीवाला अपनी अधर सुधा में मुझ सारहीन को भरपूर कर अपनी सेवा में स्वीकार कर ले। प्यारे ! सच तो यह है कि—

माना के तेरे दीद के क़ाबिल नहीं हूँ मैं।
तू मेरा शौक़ देख मेरा इन्तजार देख ॥

कोई तुझ से धन मान आराम माँगे, मेरी तो माँग मौलानी रूमी की तरह यह है—

ए ख़ुदाबन्द यके यार जफ़ा कारश देह।
दिलबरे इशवागर सरश व ख़ूँखारश देह ॥

चंद रोज़े जे पए तजरवाए वीमारश कुन।
वा तबींवानें दग़ा पेशा सरोकारश देह॥
ता बेदानद कि शबे मा व हिसाँ मी गुज़रद।
दरदे इशक़श देह व इशक़श देह व निसयारश देह॥

दर्द दे, दीवानगी दे वेखुदी दे—और खूव दे। ज़ख्मों को छीलने को सदा आतुर हूँ ऐसा उन्माद दे—क्यों कि मैं तेरा स्वभाव जानता हूँ, प्रेम का नियम जानता हूँ। क्या संतों ने गान न किया है—

रू सर बेना वे वालीं तनहा मरा रेहा कुन।
तरके मन खराबी शब गर्द मुवतला कुन॥
मायेम व मौज सौदा शव ता वरोज़ तनहा।
ख्वाही वेया व बख़शा ख्वाही वेरा जफ़ा कुन॥
वर शाहे खूव रूयाँ वाजिव वफ़ा न वाशद।
ए ज़र्द रूऐ आशिक़ तू सब्र कुन वफ़ा कुन॥
दर्देस्त गैर मुरदन आँरा दवा न वाशद।
पस मन चेगो न गोयम आँ दर्द रा दवा कन॥

अर्थात् प्रेम के पथ में प्रवेश कर—भगवान श्री राधा कृष्ण को इसी एक जन्म में प्राप्त करने की एक ही चाल हम को मालूम हुई—'naked proceed to naked Christ, अर्थात् सब तज हरि भज। इस लिये श्री मीराजी की अनुकरण करी साधना में निर्भय हरि भक्त को सब उपहास व कष्ट सहकर प्रवेश कर जीवन कृत्य करना है। उनका वह उपदेश हृदयाँगम करना है-

'काजल टीका हम सब त्यागा त्यागो है बाँधन जूरो।
मेवा मिसरी मैं सब ही त्यागा त्यागा है सक्कर बूरो॥

तन की आस कबहूँ नाहीं कीनी ज्यूँ रण माहीं सूरो ।
(श्री) मीरा के प्रभु गिरधर नागर बर पायो मैं पूरो ॥'

मौलानी रूमी सत्संग मे इस स्थिति के अधिकारी से कम केलिये स्थान ही नहीं बताते—

ग़रज़ आनस्त कि क़ारिग़ शवम अज़ कारे जहाँ ।
वरना अज़ गोशए मैख़ाना च कारस्तं व क़रज़ ॥

अर्थात् तुझे आना है हमारे बीच तो कपड़े फाड़ के आ । सिर पर कफ़न बाँध कर आ । नहीं तो—

काज़ीए शहर हो या शेख़े हरम कोई ।
जो न हो मस्त निकालिए उसे मैख़ाने से ॥

अर्थात् तू कोई भी हो—तेरे लिए हमारे बीच जगह नहीं ॥

—( श्री राधा भवन सत्संग से प्राप्त )

अपनी आँखों उसे मैं देखूँ ।
ऐसा भी कभी ख़ुदा करेगा ॥



तू भी न अगर मिला करेगा ।
आशिक फिर जी के क्या करेगा ॥

## पथ प्रदीप

देहेऽस्थिमांस रुधिरेऽभिमतिं त्यज त्वं
जायासुतादिषु सदा ममतां विमुञ्च ।
पश्यानिशं जगदिदं क्षणभङ्गनिष्टं
वैराग्यराग रसिको भव भक्ति निष्ठः ॥
धर्मं भजस्व सततं त्यज लोक धर्मान्
सेवस्व साधुपुरूषाञ्जहि कामतृष्णाम् ।
अन्यस्य दोषगुण चिन्तनमाशु मुक्त्वा
सेवा कथा रसमहो नितरां पिव त्वम् ॥

( श्रीपद्मपुराण )

अर्थात्—इस हड्डी मांस और रुधिर के संघात रूप शरीर में मैं-पन का अभिमान छोड़ दीजिये और स्त्रीपुत्रादि में मेरापन का भाव त्याग दीजिये । संसार को क्षणभंगुर जानिये । एक मात्र वैराग्य-रस-रसिक बन भक्ति कीजिये । लौकिक धर्म छोड़ भजन करिये. दूसरों के गुण दोष न देख, साधुसेवा करते, भोगों की लालसा त्याग भगवत सेवा व कथा में मगन रहिये ।

*'The shades of evening mark the close of day;*
*The sunset fades, the world grows cold and grey;*
*Across the plains, the lengthening shadows play;*
*O tentsman! haste and strike the tents I pray;*
*The Caravan's already on the way.'*

( *Minucheri* )

—श्रीहरि ॐ तत सत्—

# हमारि श्री गुरुदेव श्री मीराजी

## ( श्री राधा सत्संग पुष्प वाटिका से )

"राह देखती हैं मूक आह भर आँखें सदा
अनिश बरसती करुण रस धारा है।
प्राण चातकों ने लगाई रट पी की सदा
फीकी हुई ज़िन्दगी न दीखता सहारा है॥
पुलक कदम्ब में कदम्ब से खिले हैं अङ्ग
सुधामयि पावस का प्रबल पसारा है।
गाढ़ प्रेम बाढ़ में निमग्न बहा जाता मन
हा हा कहाँ नाविक सुजान प्रान प्यारा है॥

---

बाधा सह के भी राधा वर से निभाती नेह
जाँची परखी श्री प्रीति रीति नहीं काँची थी।
भीत लोक लाज या समाज की न राखी रंच
संत बीच बैठ दिव्य प्रेम कथा बाँची थी॥
रूठी दुनिया हो भली झूठी बतलाय उसे
दृष्टि में गोविन्द की सदा ही वह साँची थी।
प्रीतम प्रवीन दीनबन्धु के रिझाने को
(हमारी) मीरा मंजु घूँघरू पगों में बाँध नाची थी॥"

[ श्री रामनारायण शास्त्री 'राम' विरचित ]



# श्री बृज चन्द चकोरी मीरा

श्री वैष्णव मत के सार सिद्धान्त तथा श्री मीराजी की जीवनी The Story of Mirabai 7th Edition का विशद अनुवाद व श्रीमीरा जी के ३५० पद (जिस में टिप्पणी सहित गुजराती के १५० पद सम्मिलित हैं) व्रज रस के अनेक पद तथा प्रेमा भक्ति की अपूर्व झाँकी, सङ्कीर्तन का रहस्य वर्णित है।

पृष्ठ ६०० सचित्र

मूल्य ५)

---

मिलने का पता

**श्रीराधा भवन, वृन्दावन**

# REVIEW OF

## श्री विरहणी गोपिका—२०० पृष्ठ—मूल्य ३)

The Theosophist Adayar writes—

*If one wants to know how a true devotee of the Lord feels, thinks and acts, then, here is laid bare before him a most beautiful picture of a heart steeped in love of the most exalted order. The "Virahini Gopika" is a collection of ecstatic effusions coming out of the inmost recesses of the devotee's heart. It is really a treat to go through it. Page after page the reader comes into contact with some new and unique phase of mystic life, prominently revealed, which cannot fail to evoke due response from his heart too.*

*The "Virahini Gopika" shows emphatically clearly how the true devotee has to strip himself completely of everything else except the yearning to have the Darshana of the Lord once, yea, only once !*

*Ah ! The life of the devotee ! Well, that is a long, long chapter of suffering and privation, of the most intense pang of separation from the Beloved. Ye it is in that most crucial pang; in the ecstacy, enjoyment unconsciounesss, merging, resulting therefrom— of course all with the self utterly effaced, that there comes to the devotee the inexpressible joy of communion with the Lord. It is indeed a valuable book for everybody interested in the Bhakti cult of life. I wish it all success.*

Printed By-BRAJDHAM PRESS, VRINDABAN. By Shri Indu Goswami and Published by Rai Gerindra Narain B.A. for Radhika Library Vrindaban.